वेश्या-नृत्य-स्तोत्र

लेखक

पंडित जुगलकिशोर मुख्तार
सरसावा, जि० सहारनपुर

प्रकाशक

जैन-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
हीराबाग, बम्बई

प्रथमावृत्ति } कार्तिक १९८५ { मूल्य— सदुपयोग

नवम्बर, १९२८

उपहार

—०—

इस पुस्तककी डेढ़ हज़ार प्रतियाँ साहु श्रेयांसप्रसादजी जैन रईस नजीबाबाद जि० बिजनौरकी आर्थिक सहायतासे छपाई गई हैं, और इस लिये सर्व साधारणकी सेवामें विना-मूल्य, बतौर उपहारके, समर्पित हैं।

प्रकाशक

प्रकाशकके दो शब्द

अलंकार-छटाको लिये हुए, यह स्तुतिनिन्दात्मक (स्तुतिमें निन्दाका द्योतक) स्तोत्र बड़ाही भावपूर्ण तथा शिक्षाप्रद स्तोत्र है। इसके पढ़नेमें पद्यका सा आनंद आता है और यह, थोड़ेमें ही, सहृदय पाठकोंको वेश्यानृत्यके दोषोंका बहुत कुछ अनुभव करा देता है। प्रारंभमें लेखकमहोदयने संस्कृत पद्यमें जो स्तोत्र दिया है गद्यस्तोत्र उसीकी सुन्दर व्याख्या—स्वोपज्ञटीका—अथवा उसका हृदयग्राही, प्रस्फुटित और पल्लवित रूप है। साहित्यकी दृष्टिसे यह स्तोत्र कुछ कम कामकी चीज़ नहीं है। आशा है पाठक गण इसे ज़रूर अपनाएँगे और इसकी दक्षिणामें वेश्यानृत्यके आगे सदा ही दूरसे ढाई हाथ जोड़ा करेंगे।

प्रकाशक

वेश्या-माहात्म्य !

" वेश्याऽसौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता ।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च ॥"

वेश्या रूपेन्धनसे बढ़ी हुई वह कामज्वाला है जिसमें कामीजन अपने यौवन और धनका स्वाहा कर देते हैं।

" इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः ।
निष्फलत्वमलं यान्ति वेश्याविहगभक्षिताः ॥ "

लोकमें सर्वस्व फलको फलने वाले कुलपुत्ररूपी महावृक्ष जब वेश्यारूपी पक्षियोंसे भक्षित होते हैं तब वे निष्फलताको प्राप्त हो जाते हैं—उनमें फिर फल नहीं लगते ।

"याः खादन्ति पलं पिबन्ति च सुरां जल्पन्ति मिथ्यावचः
स्निह्यन्ति द्रविणार्थमेव विदधत्यर्थ-प्रतिष्ठाक्षतिम् ।
नीचानामपि दूरवक्रमनसः पापात्मकाः कुर्वते
लालापानमहर्निशं न नरकं वेश्यां विहायाऽपरम्॥"

जो नित्य मांस खाती, शराब पीती, झूठ बोलती, धनके लिये ही प्रेम रखती, द्रव्य हरती, प्रतिष्ठाको धूलमें मिलाती, और नीचोंकी राल पीती है उन कुटिलहृदया पापिनी वेश्याओंसे भिन्न दूसरा नरक इस लोकमें नहीं है।

"वेश्यासक्तिः प्राणाऽर्थमानहानिं कस्य न करोति ?

वेश्यासक्ति किसके प्राणोंकी, धनकी और मानकी हानि नहीं करती ? सभीको तीनों प्रकारकी हानि पहुँचाती है।

वेश्यानृत्य-स्तोत्र

वेश्यानृत्य ! नमस्तुभ्यं
स्वार्थचिन्ताविघातिने ।
लज्जां पापादिभीतीश्च
हित्वा स्वातंत्र्यदायिने ॥

हे वेश्यानृत्य ! ऐ रंडीके नाच ! तुझे नमस्कार हो, प्रणाम हो, हम तेरे आगे ढाई हाथ जोड़ते हैं ! ! संसारके अधिकांश मनुष्य स्वार्थमें फँसकर पतित हो रहे हैं, स्वार्थी और खुदगर्ज़ जैसे बुरे नामोंसे पुकारे जाते हैं; परन्तु जो लोग तेरी शरणागत हैं वे इस कलंकसे मुक्त हैं ! तू अपने भक्तोंकी स्वार्थचिन्ताको ही दूर कर देता है—तेरे उपासकोंको कमाने खाने तककी फ़िकर नहीं रहती, फिर

लिखने पढ़ने और गुरुजनोंकी सेवा-शुश्रूषा आदिकी बात तो कौन कहे ! वे अर्थकी तो क्या धर्म-पुरुषार्थकी भी कुछ पर्वाह नहीं करते !! ऐसी निश्चिन्तावस्था जिसके द्वारा साध्य हो वह क्या स्तुतिका पात्र नहीं है? अवश्य ही स्तुतिके योग्य है!

महाशय! आपके प्रतापसे, आपके संसर्ग अथवा सत्संगसे भक्तजनोंकी गति सहज हीमें वेश्या महादेवी तक हो जाती है और वे उस रूपेन्धनसे प्रज्वलित कामज्वालामें बड़ी खुशीके साथ अपने धन, धर्म और यौवन सभीका स्वाहा कर डालते हैं, यह कितना बड़ा स्वार्थत्याग है! सच पूछिये तो, त्यागभावकी शिक्षा आपके ही द्वारा प्रारंभ होती है!! आपकी प्रेरणासे कभी कभी मनुष्य इतने निर्मोही हो जाते हैं कि वे अपनी सर्वांगसुन्दर, सच्चरित्र और शीलसम्पन्न गृहदेवियोंका भी त्याग कर देते हैं!!!

भक्तवत्सल ! आपके अनुग्रहसे वेश्या महादेवीका सामीप्य प्राप्त होने पर भक्तजनोंके क्रोध, मान, माया और लोभ शान्त हो जाते हैं—उन पर चाहे कितनी भी गालिवर्षा हुआ करे, जूतियोंकी मार तक पड़े परंतु वे चूँ तक नहीं करते ! उन्हें क्रोध नहीं आता और न वे उसके द्वारा अपना कुछ अपमान ही समझते हैं ! ! खुशीके साथ सब कुछ सहन करते हुए खुले हाथों अपना द्रव्य लुटाते हैं। मायाचार किये उनसे नहीं बनता और न लोभी मनुष्यको उक्त महादेवीका सामीप्य ही प्राप्त होता है। इस तरह जब आपकी बदौलत चारों कषायें ही शांत हो जाती हैं तब स्वार्थचिन्ता कैसे रह सकती है ? फिर तो मुक्तिका सर्टिफ़िकेट मिला ही समझिये ! चाहे वह मुक्ति हो अपने कुटुम्ब परिवारसे, कार्य-व्यवहारसे, धनधान्यसे, धर्माचरणसे, इज़्ज़त-आबरूसे, शरीर-मनसे और या जीवनोपायकी

चिन्ताओंसे ! गरज़ है मुक्ति ! और वह मुक्ति आपके दर्शनोंसे सहज-साध्य हो जाती है। इस लिये आपको हमारा दंडवत् है ! !

महात्मन् ! वास्तवमें आपकी महिमा अपरंपार है। आपकी छत्र-छायामें रह कर मनुष्य बहुत कुछ स्वच्छंद हो जाता है, उसके बंधन टूट जाते हैं, वह स्वतंत्र बन जाता है, लोकलाजका भूत फिर उसे नहीं सताता और न गुरुजनोंकी ही उसे कुछ पर्वाह रहती है। आपके अखाड़ेमें बाप-बेटा, बाबा-पोता, चचा-भतीजा, ससुर-जँवाई और मामा-भानजा सभी एक स्थान पर बैठे हुए, विना किसी संकोचके, बड़ी खुशीके साथ उक्त महादेवीकी आराधना किया करते हैं; वह देवी उस समय सभीके विनोद और विलासकी चीज होती है, सभी उसको एक नजरसे देखते हैं और उसे अपनी प्राणवल्लभा बनानेकी चेष्टा किया करते हैं। वहाँ लज्जाका नाम

नहीं और न शरमका कुछ काम होता है। संसारमें लोकलाजका बड़ा भारी बंधन है, सैकड़ों अच्छे बुरे काम इसकी वजहसे रुके रहते हैं, गृहस्थोंको परम दिगम्बर मुनिमुद्रा धारण करनेमें भी यही बाधक होती है; सो श्रीमन्! इसका विजय आपके प्रतापसे बातकी बातमें हो जाता है, आपके अनुग्रहसे भक्तजनोंका यह बंधन शीघ्र टूट जाता है और उनका आत्मबल फिर इतना बढ़ जाता है कि उन्हें एक व्यभिचारिणी, पाप-प्रचारिणी और मद्य-मांस तथा व्यभिचारादिके सेवनका उपदेश देनेवाली विलासिनी स्त्रीके द्वार तक पहुँचने, दर्वाजा खटखटाने और उसकी चरणसेवाको अपना अहोभाग्य समझनेमें कुछ भी संकोच नहीं होता और न कोई प्रकारका भय रहता है! यह कितना बड़ा स्वात्मलाभ है!!

कृपानिधे! कभी कभी स्त्रियाँ भी आपके प्रसादसे पार उतर जाती हैं—बन्धमुक्त हो जाती

हैं—उन्हें विवाहादिके अवसरोंपर जब आपके दर्शनोंका शुभ सौभाग्य प्राप्त होता है तब वे आपकी अधिष्ठात्री देवताकी बेहद भक्ति-पूजाको देखकर अथवा यह देखकर चकित हो जाती हैं, कि अच्छे अच्छे सेठ-साहूकार और धनकुबेर भी सामने हाथ बाँधे खड़े अथवा बैठे हैं, उसकी तानमें हैरान व परेशान है, भेट तथा नजरें चढ़ा रहे हैं और इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब वह देवी एक प्रेमभरी नज़रसे उनकी ओर देखती है या कमसे कम अपनी मधुर मुसकराहटसे उन्हें पवित्र बनाती है। इस दृश्यसे वे स्त्रियाँ, जो हमेशा घरकी चार दीवारियोंमें बंद रहती हैं, चौका चूल्हा करती हैं, रसोई बनाती हैं, बर्तन माँजती हैं, संतानका पालन करती है और कुटुम्बीजनोंकी दूसरी अनेक प्रकारकी सेवा-शुश्रूषाओंमें लगी रहती हैं परंतु फिर भी तिरस्कार पाती हैं, अपनेको धिक्कारती हैं—अपने इस

दासत्वमय जीवनकी निन्दा करती हैं—और उस महाभाग्यशालिनी देवीके जीवनकी सराहना करती हुई, उसे धन्य कहती हुई और यह समझती हुई कि पुरुषोंको ऐसी ही स्त्रियाँ पसंद आती हैं, आप भी तद्रूप होनेकी भावना करती हैं। बहुतसी स्त्रियोंकी व्यभिचारसे घृणा उठ जाती है। और किसी किसीका लज्जा-बंधन तो यहाँ तक टूट जाता है कि वे पर-पुरुषके साथ घरके जेलखानेसे निकल भागती हैं और इस तरह अपनेको स्वच्छंदचारिणी बना लेती हैं!!

महोदय! यह सब आपकी ही करामात है!! आपके कृपाकटाक्षसे भक्तजन उन पंच पापोंका ज़रा भी भय नहीं करते जिनसे अच्छे अच्छे महात्मा तथा योगीजन डरते और घबराते हैं। वे वेश्या महादेवीकी आराधनाके लिये सब कुछ पापाचरण करनेको तय्यार रहते हैं। उसे मांस चढ़ाते हैं,

शराबकी बोतलें पिलाते हैं, उसके कारण झूठ बोलते हैं, चोरी तक करते हैं, जेवर-कपड़ा छीन कर या अन्य प्रकारसे अपनी स्त्रीको सताते हैं। और यह बात तो सब जानते हैं कि उक्त महा-देवीको जो कुछ भेट पूजा चढ़ाई जाती है उससे वह गौ आदिकी कुर्बानी जरूर करती है। परंतु फिर भी भक्तजन उसके चरणोंमें बराबर द्रव्य अर्पण किये जाते हैं और इस बातकी जरा भी पर्वाह नहीं करते कि उसके द्वारा कितने गोवंशका नाश होगा और कितने मूक पशुओंकी जानें जायँगी! यह कितनी बड़ी निर्भीकता है!! भला जो लोग इतने कायर हैं कि पापोंसे ही डरते हैं वे इस संसार-समुद्रसे कैसे पार उतर सकते हैं? पार वे ही उतर सकते हैं जो पापोंकी जरा भी पर्वाह नहीं करते और न उनसे कुछ भय खाते हैं! प्रत्युत, पापियोंको उनके पापाचरणमें बराबर सहायता प्रदान करते रहते हैं!!

महानुभाव ! यह अभया दशा और यह निर्भय पदकी प्राप्ति आपके ही द्वारा साध्य होती है ! आपके प्रसादसे गुरुजनोंका, पञ्च-पंचायतका, और राज्यका भी कोई भय नहीं रहता ! ! आप लज्जा तथा पापादिजन्य भयोंको दूर करके स्वतंत्रता प्रदान करनेवाले हैं ! भले ही आपके कारण मनुष्य घरका या घाटका न रहे परंतु वह स्वतंत्र ज़रूर हो जाता है ! ! स्वतंत्रता संसारमें बड़ी ही स्पृहणीय वस्तु है। सारा संसार उसके पीछे मारा मारा फिरता है। हर एक यही चाहता है कि मैं स्वतंत्र अथवा स्वाधीन बन जाऊँ; और यह बात है भी अच्छी। क्यों कि परतंत्रता अथवा पराधीनतामें दुःख ही दुःख भरा हुआ है। कहा भी है—“ पराधीन सुपने सुख नाहीं।” जब स्वतंत्रता जैसी अच्छी वस्तु ही आपकी बदौलत प्राप्त होती है तो फिर आपके बराबर उपास्य और कौन हो सकता है ?

महाभाग्य ! इस तरह आप स्वार्थचिन्ताओंका नाश करनेवाले और लज्जा तथा पापादिजन्य भीतियोंको दूर करके स्वतंत्रता प्रदान करनेवाले हैं। अतः आपको हमारा साष्टांग प्रणाम है ! ! आप हमारे ऊपर दूरसे ही कृपादृष्टि रक्खें और हमेशा हमें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करते रहें जिससे हम आपको इसी प्रकारके स्तोत्रोंद्वारा याद करते रहें ! ! !

शिक्षाप्रद वाक्य

" ब्याह समय सौभाग्यको राँड नचावैं भूर !
मंगलमें असगुन करैं पड़ी बुद्धिपै धूर !! "

" शुभकाजको छोड़ कुकाज रचैं,
नहिं आवत लाज जरा तिनको;
एक राँड बुलाय नचावत हैं,
धन जावत व्यर्थ सदा तिनको ।
मिरदंग भनै धिक है ! धिक है !!
सुरताल कहैं किनको किनको ?
तब हाथ पसार कहै गणिका,
इनको इनको इनको इनको !!! "

" क्या गुण है इस राँडमें, कुछ तो देहु बताय ?
सिरचूतड़ मटकायके, द्रव्य लूट ले जाय !! "

"धनकारन पापनि प्रीति करै,
नहिं तोरत नेह जथा तिनकौ;
लव चाखत नीचनके मुँहकी,
शुचिता सब जात छियें जिनकौं।
मद्‌मांस बजारनि खाय सदा,
अँधले विसनी न करैं घिनकौं;
गनिका सँग जे सठ लीन रहैं,
धिक है! धिक है!! धिक है तिनकौं!!!"

✣ ✣

"माँस भखै सुचखै नित वारुनि,
निंद शरीर झरै नित हीके;
चाखत नीचनके लव लम्पट
लाज रु धर्म न रंच कुधीके।
छीन सुदाम न प्रीति धरै,
मुख बैन कहै दुखदायक फीके
'बाल' कहै धिक हैं जन जे
गनिकानके पाँय पलोटत नीके॥"